AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

ग्वालियर दुर्ग का इतिहासः कुछ अनछुये तथ्य

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. समीर भार्गव
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर सैन्य विज्ञान विभाग
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

डॉ. विष्णु कान्त शर्मा
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर सैन्य विज्ञान विभाग
महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्वशासी महाविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

ग्वालियर भारत के लगभग मध्य में स्थित है। मध्य प्रदेश के मानचित्र पर यह शीर्ष पर 22 डिग्री 5 मिनट से 26 डिग्री 52 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं 74 डिग्री 2 मिनट से 79 डिग्री 12 मिनट पूर्वी देशांतर पर स्थित है। ग्वालियर दुर्ग विंध्य पर्वतमाला के अंतिम किनारे पर स्थित है। यह पर्यटन के प्रसिद्ध नगर आगरा से 118 किलो मीटर दूर है। आगरा से ग्वालियर रेल एवं सड़क मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है। दूर से दुर्ग बहुत सुन्दर एवं आर्कषक दिखायी देता है। दुर्ग के ऊँचे बुर्ज एवं ऊँची प्राचीरें पर्यटकों को अपनी ओर आर्कषित करती है। यहाँ आकर पर्यटक इसकी सुन्दरता में एवं विशालता में खो जाता है।

मुख्य शब्द

ग्वालियर, दुर्ग, पर्यटक, प्रागैतिहासिक.

भारत के मध्य भाग में स्थित होने से ग्वालियर प्रारम्भ से ही सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण रहा है। यह दुर्ग प्रमुख सैनिक एवं राजनैतिक शक्तियों को प्रारम्भ से ही अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। प्राचीनकाल में निम्नलिखित मार्ग इस क्षेत्र से जाते थेः

1. मथुरा से उज्जैयनी– गोपाद्री, पद्मावती, तुम्बावना, गोनार्दा एवं विदिशा।
2. तुम्बावना से प्रयाग अथवा कान्याकुब्जा।
3. गोपाद्री से कान्याकुब्जा।
4. गोपाद्री से कलंजारा।

वर्तमान ग्वालियर तीन उप–नगरों से मिलकर बना है जिसमें प्राचीन ग्वालियर, लश्कर एवं मुरार सम्मलित हैं। ग्वालियर का प्राचीन उपनगर दुर्ग के उत्तर में पहाड़ी की तलहटी में बसा है। ग्वालियर उपनगर प्राचीन एवं मध्यकालीन भवनों का नगर है। ग्वालियर के प्रमुख सूफी संत बाबा कपूर की दरगाह एवं शेख मौहम्मद गौस का मकबरा, संगीत सम्राट तानसेन का मकबरा, औरंगजेब के सूबेदार मौतमिद खॉ द्वारा बनवायी गयी जामा जामा मस्जिद, लधेड़ी द्वार एवं मराठाकालीन गणेश बाग नगर के इसी भाग में है।

प्राचीनकाल से ही ग्वालियर दुर्ग का इतिहास में गौरवशाली स्थान रहा है। इस भू–भाग का उल्लेख

पुराणकाल से होता आया है। महाभारत में इसे तोमर जनपद अभिधान दिया गया हैं। स्कंदपुराण एवं हरवंशपुराण में भी इस क्षेत्र का उल्लेख है। ग्वालियर के गुप्तेश्वर क्षेत्र में स्थित गुफा में प्रागैतिहासिक मानव निर्मित चित्रकारी पायी गयी है। मुरार नदी की खुदायी के दौरान भी प्रागैतिहासिक कालीन अवशेष प्राप्त हुये है। पवाया, कुंतलपुरी तथा सुहानिया में खुदायी के दौरान नागकालीन सिक्के प्राप्त हुये हैं। ईसा पूर्व छटवीं शताब्दी के आरम्भ में इस क्षेत्र में पाटिलपुत्र के नंद वंश का राज्य होने का उल्लेख प्राप्त होता है। ईस्वी प्रथम शताब्दी के प्रारम्भिक काल में नाग वंश का राज्य होने के प्रमाण मिलते है। पवाया से प्राप्त पुरालेख से यह जानकारी प्राप्त होती है कि ईस्वी तीसरी सदी तक कुशाणों ने यहॉ राज्य किया। कुशाणों को परास्त कर चौथी शताब्दी तक नागों ने राज्य किया। अंतिम नाग राजा गणपति था। गणपति के समय इस राज्य का विलय गुप्त राज्य में हो गया था। कन्नौज के प्रतिहार, दक्षिण के राष्ट्रकूट तथा बंगाल के पाल वंश का उदय पॉचवी शताब्दी में हुआ। ग्वालियर के इतिहास पर इनका काफी प्रभाव रहा। ग्वालियर दुर्ग पर सूर्य मंदिर का निर्माण 525 ई. में मिहिरकुल के राजा मातृचेट ने करवाया।

प्राचीनकाल से ही ग्वालियर दुर्ग का इतिहास में गौरवशाली स्थान रहा है। इस भू–भाग का उल्लेख पुराणकाल से होता आया है। महाभारत में इसे तोमर जनपद अभिधान दिया गया हैं। स्कंदपुराण एवं हरवंशपुराण में भी इस क्षेत्र का उल्लेख है। ग्वालियर के गुप्तेश्वर क्षेत्र में स्थित गुफा में प्रागैतिहासिक मानव निर्मित चित्रकारी पायी गयी है। मुरार नदी की खुदायी के दौरान भी प्रागैतिहासिक कालीन अवशेष प्राप्त हुये है। पवाया, कुंतलपुरी तथा सुहानिया में खुदायी के दौरान नागकालीन सिक्के प्राप्त हुये हैं। ईसा पूर्व छटवीं शताब्दी के आरम्भ में इस क्षेत्र में पाटिलपुत्र के नंद वंश का राज्य होने का उल्लेख प्राप्त होता है। ईस्वी प्रथम शताब्दी के प्रारम्भिक काल में नाग वंश का राज्य होने के प्रमाण मिलते है। पवाया से प्राप्त पुरालेख से यह जानकारी प्राप्त होती है कि ईस्वी तीसरी शदी तक कुशाणों ने यहॉ राज्य किया। कुशाणों को परास्त कर चौथी शताब्दी तक नागों ने राज्य किया। अंतिम नाग राजा गणपति था। गणपति के समय इस राज्य का विलय गुप्त राज्य में हो गया था। कन्नौज के प्रतिहार, दक्षिण के राष्ट्रकूट तथा बंगाल के पाल वंश का उदय पॉचवी शताब्दी में हुआ। ग्वालियर के इतिहास पर इनका काफी प्रभाव रहा। ग्वालियर दुर्ग पर सूर्य मंदिर का निर्माण 525 ई. में मिहिरकुल के राजा मातृचेट ने करवाया।

गुर्जर प्रतिहार राजा द्वितीय (800–830 ई.) जो कि कन्नौज का राजा था, उसके द्वारा गोपगिरि पर राज्य करने के प्रमाण मिलते हैं। सागर ताल से प्राप्त शिलालेख तथा चर्तुभुज मंदिर से के शिलालेख जो कि 875 ई. एवं 876 ई. के है, से हमें ज्ञात होता है कि मिहिर भोज ने अल्ला अर्थात् आला को ग्वालियर दुर्ग का किलाधिपति नियुक्त किया था। इसी काल में मान मंदिर के पास हाथी द्वार के समीप एक पहाड़ी चट्टान को काटकर सुन्दर विष्णु मंदिर का निर्माण किया गया।

शहस्त्रवाहु के मंदिर में विक्रम संवत 1150 के शिलालेख से कछवाह राजाओं की वंशावली ज्ञात होती है। प्रतिहार वंश का शासन ग्वालियर में 1128 ई. से लेकर 1211 ई. तक रहा है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्वालियर दुर्ग एवं इसके आसपास के क्षेत्र में भारतीय सैन्य इतिहास के एसे स्त्रोत बिखरे हुए है जिनकी कड़ियों को पिरोना समय की आवश्कता है।

ग्वालियर भारत के लगभग मध्य में स्थित है। मध्य प्रदेश के मानचित्र पर यह शीर्ष पर 22 डिग्री 5 मिनट से 26 डिग्री 52 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं 74 डिग्री 2 मिनट से 79 डिग्री 12 मिनट पूर्वी देशांतर पर स्थित है। वर्तमान ग्वालियर जिले के उत्तर पूर्व में भिण्ड जिला, पूर्व में दतिया तथा उत्तर पश्चिम में मुरैना जिला स्थित हैं। शिवपुरी जिला ग्वालियर से दक्षिण दिशा में स्थित है। ग्वालियर राज्य मध्य भारत का महत्वपूर्ण राज्य था। मराठाकालीन ग्वालियर का कुल क्षेत्रफल 26367 वर्गमील था।[1]

ग्वालियर समुद्रतल से 697 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। ग्वालियर जिले की सीमायें लगभग सभी दिशाओं में नदियों द्वारा निर्धारित है। इनमें प्रमुख नदियां सिंध, पार्वती, नौन, छछूंद, आसन, पहूॅच, वैशाली, मुरार, स्वर्णरेखा एवं सांक है। सांक नदी पर तिधरा बांध बना हुआ है जिससे ग्वालियर महानगर को पेयजल की आपूर्ति की जाती है।

ग्वालियर मध्य रेलवे का प्रमुख जंक्शन है। यह दिल्ली–चेन्नई एवं दिल्ली मुम्बई रेलवे लाइन पर स्थित है। ग्वालियर से भिण्ड, श्योपुर–सबलगढ़ तथा शिवपुरी, गुना एवं अशोकनगर के लिये भी रेलसेवा उपलब्ध है। ग्वालियर देश के प्रमुख नगरों से वायुसेवा से भी जुड़ा है। ग्वालियर जिले में 715 ग्राम एवं 35 पुलिस थाने है। ग्वालियर जिले में साक्षरता का प्रतिशत 62 है। वर्तमान ग्वालियर जिले में तीन दुर्ग ग्वालियर, पिछोर एवं देवगढ़ है एवं पचास से अधिक लधु दुर्ग अर्थात् गढ़ियॉ स्थित हैं।[2]

ग्वालियर दुर्ग विंध्य पर्वतमाला के अंतिम किनारे पर स्थित है। यह पर्यटन के प्रसिद्ध नगर आगरा से 118 किलो मीटर दूर है। आगरा से ग्वालियर रेल एवं सड़क मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है। दूर से दुर्ग बहुत सुन्दर एवं आर्कषक दिखायी देता है। दुर्ग के उँचे बुर्ज एवं ऊँची प्राचीरें पर्यटकों को अपनी ओर आर्कषित करती है। यहाँ आकर पर्यटक इसकी सुन्दरता में एवं विशालता में खो जाता है।

ग्वालियर का नामकरण

ग्वालियर नगर का नाम गोप पर्वत अथवा गोपाचल के नाम से कालान्तर में ग्वालियर हो गया। गोपाचल पर्वत को गोपगिरि तथा गोपाद्रि भी कहते है।[3] गोपक्षेत्र में निवास करने वाले सुधीजन गोपाचल को श्रद्धा एवं भक्ति के साथ नमन करते रहे है। खड्गराय ने गोपाचल आख्यान में श्लोक उद्धत किया है:

गोपाचले महादुर्गे, ग्वालिपा यत्र तिष्ठते।
ऋद्धि सिद्ध प्रदातारौ, ये नमन्ति दिने दिने।।[4]

इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्वालियर गोपाचल, गोपगिरि, गोपक्षेत्र आदि नामों से जाना जाता रहा है।

ग्वालियर दुर्ग का सामरिक महत्व

भारत के मध्य भाग में स्थित होने से ग्वालियर प्रारम्भ से ही सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण रहा है। यह दुर्ग प्रमुख सैनिक एवं राजनैतिक शक्तियों को प्रारम्भ से ही अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। प्राचीनकाल में निम्नलिखित मार्ग इस क्षेत्र से जाते थे:

1. मथुरा से उज्जैयनी– गोपाद्री, पद्मावती, तुम्बावना, गोनार्दा एवं विदिशा।
2. तुम्बावना से प्रयाग अथवा कान्याकुब्जा।
3. गोपाद्री से कान्याकुब्जा।
4. गोपाद्री से कलंजारा।

मध्यकाल में प्रमुख मार्ग जो ग्वालियर से होकर जाते थे, इस प्रकार है:

1. ग्वालियर से नरवर, मालवा एवं राजस्थान तक।
2. ग्वालियर–धौलपुर–आगरा–दिल्ली।
3. ग्वालियर से इटावा, लहार, दवोह, उरई।
4. ग्वालियर से दिल्ली, धौलपुर, भरतपुर, बयाना होकर।
5. ग्वालियर से दतिया, झाँसी, खजुराहो तक।
6. ग्वालियर से पवाया, करहरा, पिछोर होते हुये चंदेरी तक।

ग्वालियर दुर्ग तक आने के लिये सभी दिशाओं से नदियॉ एक प्राकृतिक एवं सामरिक सुरक्षा प्रदान करती थी जिनमें चम्बल, कुंआरी, सांक, मुरार वैशाली, सिंध, पार्वती, नौन, छछूद, पहूंच, आसन प्रमुख है। बाबर ने लिखा है कि ग्वालियर दुर्ग तक आने में वर्षाकाल में कुंआरी नदी को नाव तथा घोड़ों द्वारा पार करने में काफी कठिनाई हुयी।[5]

उत्तर से दक्षिण जाने वाले राजमार्ग पर होने के कारण ग्वालियर दुर्ग आक्रमणों का शिकार भी होता रहा है।[6]

1527 ई. में जहीरूद्दीन बावर ने अपने राजनामचे में लिखा थाः

तबियत ठीक न होने के बावजूद मैंने मानसिंह, विक्रमाजीत के महलों को ,जो इस किले में है घूमकर देखा। वे विलक्षण और सुन्दर महल है। यह अनुपात से ... *भारी–भारी तराशे हुये पत्थरों के बने है। सभी राजाओं के भवनों की अपेक्षा मानसिंह का भवन बड़ा और शानदार है।* उत्तर भारत के खड़े एवं सुन्दर किलों में ग्वालियर की गणना की जाती है। इसको जीत सकना अनेक बार दुर्दान्त आक्रमणकारियों के लिये कठिन पड़ गया था। इतिहासकार हसन निजामी ने ताज–उल–माअसिर में गवालियर के किले को हिन्द के तमान किलों की मणिमाला में एक उज्जवल मोती के रूप में निरूपित किया है।[8]

वर्तमान ग्वालियर तीन उप–नगरों से मिलकर बना है जिसमें प्राचीन ग्वालियर, लश्कर एवं मुरार सम्मलित हैं। ग्वालियर का प्राचीन उपनगर दुर्ग के उत्तर में पहाड़ी की तलहटी में बसा है। ग्वालियर उपनगर प्राचीन एवं मध्यकालीन भवनों का नगर है। ग्वालिपा के प्रमुख सूफी संत बाबा कपूर की दरगाह एवं शेख मौहम्मद गौस का मकबरा, संगीत सम्राट तानसेन का मकबरा, औरंगजेब के सूबेदार मौतमिद खॉ द्वारा बनवायी गयी जामा जामा मस्जिद, लधेड़ी द्वार एवं मराठाकालीन गणेश बाग नगर के इसी भाग में है।

मुरार उपनगर ग्वालियर दुर्ग के पूर्व में है। मुरार अंग्रेजों की सैन्य छावनी के रूप में विकसित हुआ। 1803 ई. में दौलतराव सिंधिया ने अंजनगॉव की संधि पर हस्ताक्षर कर अपनी राजधानी में एक अंग्रेज सेना रखने की शर्त स्वीकर की थी। इस सेना का समस्त व्यय सिंधिया राज्य द्वारा वहन किया जाता था। इसमें अधिकांश सैनिक देशी होते थे लेकिन अधिकारी अंग्रेज हुआ करते थे। इस सेना को कण्टिन्जेण्ट सेना कहते थे। इस सेना के लिये मुरार उपनगर बनाया गया था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय इसी सेना ने विद्रोह कर महारानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया था।

लश्कर उपनगर महाराजा दौलतराव सिंधिया (1794–1827 ई.) के कार्यकाल में 1910 में सैन्य छावनी के रूप में विकसित किया गया था। लश्कर में गोरखी राजप्रसाद, कम्पू कोठी जिसमें वर्तमान में शासकीय कमलाराजा कन्या महाविद्यालय एवं शासकीय पद्मा विद्यालय संचालित हैं। नगर के इसी भाग में सिंधियाकालीन सरदार आंग्रे, सरदार शितोले, सरदार फालके, सरदार जाधव के विशाल एवं भव्य भवन हैं।

इब्नबतूता ने अपनी ग्वालियर दुर्ग की यात्रा के दौरान इसे सुगढ़ सफेद पाषाणों का सुन्दर नगर बताया है। जहाँ दरवाजों के अतिरिक्त लकड़ी का प्रयोग कहीं नहीं किया गया है।[9]

ग्वालियर दुर्ग का प्राचीन इतिहास

प्राचीनकाल से ही ग्वालियर दुर्ग का इतिहास में गौरवशाली स्थान रहा है। इस भू–भाग का उल्लेख पुराणकाल से होता आया है। महाभारत में इसे तोमर जनपद अभिधान दिया गया हैं। स्कंदपुराण एवं हरवंशपुराण में भी इस क्षेत्र का उल्लेख है।[10] ग्वालियर के गुप्तेश्वर क्षेत्र में स्थित गुफा में प्रागैतिहासिक मानव निर्मित चित्रकारी पायी गयी है। मुरार नदी की खुदायी के दौरान भी प्रागैतिहासिक कालीन अवशेष प्राप्त हुये है। पवाया, कुंतलपुरी तथा सुहानिया में खुदायी के दौरान नागकालीन सिक्के प्राप्त हुये हैं। ईसा पूर्व छटवीं शताब्दी के आरम्भ में इस क्षेत्र में पाटिलपुत्र के नंद वंश का राज्य होने का उल्लेख प्राप्त होता है। ईस्वी प्रथम शताब्दी के प्रारम्भिक काल में नाग वंश का राज्य होने के प्रमाण मिलते है। पवाया से प्राप्त पुरालेख से यह जानकारी प्राप्त होती है कि ईस्वी तीसरी सदी तक कुशाणों ने यहाँ राज्य किया। कुशाणों को परास्त कर चौथी शताब्दी तक नागों ने राज्य किया। अंतिम नाग राजा गणपति था। गणपति के समय इस राज्य का विलय गुप्त राज्य में हो गया था। कन्नौज के प्रतिहार, दक्षिण के राष्ट्रकूट तथा बंगाल के पाल वंश का उदय पॉचवी शताब्दी में हुआ। ग्वालियर के इतिहास पर इनका काफी प्रभाव रहा। ग्वालियर दुर्ग पर सूर्य मंदिर का निर्माण 525 ई. में मिहिरकुल के राजा मातृचेट ने करवाया।[11]

सूर्य मंदिर में मिले एक शिलालेख के अनुसार, 525 ई. में हूण विजेता मिहिरकुल का शासन था। कुछ इतिहासकार ग्वालियर दुर्ग को राजा सूरजसेन द्वारा 525 ई. में बनवाया जाना मानते है। डॉ. भगवत शरण उपाध्याय ने ग्वालियर के किले का अस्तित्व उत्तर–मध्यकाल पूर्व का माना है।[12]

कन्नौज के शासक यशोवर्मन ने गोपगिरि को अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने गोपगिरि पर 754 ई. तक राज किया। इसके पश्चात् उनके पुत्र आम ने ग्वालियर पर राज किया। राजा आम ने जैन तीर्थकर महावीर का 101 हाथ उँचा मंदिर दुर्ग परिसर में बनवाया।[13]

गुर्जर प्रतिहार राजा द्वितीय (800–830 ई.) जो कि कन्नौज का राजा था, उसके द्वारा गोपगिरि पर राज्य करने के प्रमाण मिलते हैं। सागर तल से प्राप्त शिलालेख तथा चर्तुभुज मंदिर से के शिलालेख जो कि 875 ई. एवं 876 ईके है, से हमें ज्ञात होता है कि मिहिर भोज ने अल्ला अर्थात् आला को ग्वालियर दुर्ग का किलाधिपति नियुक्त किया था। इसी काल में मान मंदिर के पास हाथी द्वार के समीप एक पहाड़ी चट्टान को काटकर सुन्दर विष्णु मंदिर का निर्माण किया गया।

गुर्जर, प्रतिहारों के बाद राष्ट्रकूट और पाल राजाओं का भी नियंत्रण इस किले पर रहा। इन शासकों ने राजा सूरज सेन द्वारा प्रारम्भ किये गये निर्माण कार्यों को न केवल पूरा कराया अपितु कई महल, मंदिर, बावड़ी आदि भी निर्मित करवाये।

महेन्द्रपाल (883–90 ई.) के समय में गुर्जर प्रतिहारों का पतन प्रारम्भ हो चुका था। दसवीं शताब्दी के मध्य तक दुर्ग पर प्रतिहार राजा महेन्द्रपाल का अधिकार बना हुआ था। इसके पश्चात् कालिंजर के राजा धंग का अधिकार इस दुर्ग पर हो गया। चंदेल राजा धंग (950–1008 ई.) ने गुर्जर प्रतिहार अधिराज को परास्त कर इस दुर्ग पर अधिकार किया था।

सास–बहू के मंदिर से प्राप्त एक शिलालेख के अनुसार –वज्रदमन कच्छवाह यहाँ का राजा था। वस्तुतः वज्रदमन, राजा धंग का स्थानीय सामंत था। इसके पश्चात् किले का नियंत्रण राजा दुल्हाराय, परमादिदेव, रामदेव और विनयपाल प्रतिहार के पास रहा, उसके पश्चात् कछवाह रोजपूतों के नियंत्रण में ग्वालियर दुर्ग आया।[14]

लक्ष्मण पुत्र वज्रदमन ने 950 ई. में गुर्जर प्रतिहार शासक विनयपाल को हराकर ग्वालियर दुर्ग पर अधिपत्य किया। इसी के साथ यहॉ कच्छपघात शासन की नींव डली। इनके राज्य में नरवर तथा सुरवाया यसुरवाया की गढ़ी, शिवपुरीद्ध एवं सुहानियॉ से लेकर पढ़ावली तक का क्षेत्र था।

कच्छपघात जिन्हें कि कछवाहा भी कहा जाता था, के राज्य काल में ग्वालियर दुर्ग पर शहत्रस्वाहु के मंदिर, सुरवाया के मंदिर, पढ़ावली के मंदिर तथा सुहानियॉ का ककनमठ निर्मित किये गये।

ककनमठ का शिव मंदिर राजा कीर्तिराय ने ग्यारहवीं शताब्दी में अपनी रानी ककनावती के नाम पर बनवाया था। ककनमठ के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर से दो किलो मीटर की परिधि में स्थित भगवान शान्तिनाथ, कुन्थनाथ व अहनाथ की क्रमशः 16 एवं 8, 8 फुट ऊँची प्रतिमायें व वस्त मंदिर के चबूतरे पर 20 फुट ऊँची हनुमान जी की मूर्ति, अंम्बिका मंदिर व कुण्ड व नन्दी दर्शनीय है। वर्तमान में यहाँ जैन समाज ने पुर्ननिर्माण किया है एवं अतिशय क्षेत्र भी स्थापित किया गया है। सुहानियाँ की शाल भंजिका, स्खलित वासना नायिकायें, कमनीय अप्सरायें गूजरी महल संग्रहालय ग्वालियर को सुशोभित कर रहीं है।

चम्बल घाटी में स्थापित कच्छपघात राज्य की प्रथम राजधानी कुतवार एवं दूसरी सुहानियाँ थी। जबकि दसवीं शताब्दी में प्रतिहार सत्ता को परास्त कर ग्वालियर दुर्ग पर तीसरी राजधानी स्थापति की। कछवाह काल का सुहानियाँ में निर्मित शिव मंदिर 115 फुट ऊँचा खजुराहों शैली का विशाल रथ मंदिर समस्त उत्तर भारत में एक महान स्मारक है। ग्वालियर दुर्ग पर स्थित शहत्रवाहु के मंदिर पर जड़े शिलालेखपर इस मंदिर के विषय में यह अंकित है किः

अद्भुत सिंहदानिय नगरे येन कारितः
कीर्ति स्तम्भ इवा भॉति प्रसाद पार्वतीपतेः।

शहस्त्रवाहु के मंदिर में विक्रम संवत् 1150 के शिलालेख से कछवाह राजाओं की वंशावली ज्ञात होती हैः

क्रमांक	शासक	कार्यकाल ई.	विशेष
01.	लक्ष्मण	950–975	गंगोलाताल के शिलालेख 981 ई.
02.	वज्रदमन	957–1000	सुहानियॉ के जैन पुरावलेख
03.	मंगलराज	1000–1015	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
04.	कीर्तिराज	1015–1035	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
05.	मूलदेव	1935–1055	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
06.	देवपाल	1055–1085	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
07.	पदमपाल	1085–1093	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
08.	महीपाल	1093–1105	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
09.	रतनपाल	1105–1130	शहस्त्रवाहु मंदिर का शिलालेख
10.	अजयपाल	1194–	गंगोलाताल के शिलालेख 1250 ई.

वंश के संदर्भों में राजा तेजपाल को कछवाहा कुल का अंतिम शासक बताया गया है जो दूल्हाराय के नाम से जाना जाता था। दूल्हाराय 1128 ई. में ग्वालियर छोड़कर आमेर दुर्ग पर चला गया। ग्वालियर दुर्ग पर शासन का उत्तरदायित्व दूल्हाराय ने अपने भांजे परिमाल देव परिहार को सौप दिया था। राजा तेजकरण के सम्बंध में कुछ इतिहासकारों की यह धारणा रही है कि वह विलासी राजा था। तेजकरण का विवाह दौसा के बड़गूजर राजपूत सरदार की पुत्री रूपमती से हुआ था।

प्रतिहार वंश का शासन ग्वालियर में 1128 ई. से लेकर 1211 ई. तक रहा हैः

1.	परिमाल देव	1128–1130 ई.
2.	राम देव	1130–1149 ई.
3.	हमीर देव	1149–1152 ई.
4.	कुबेर देव	1152–1168 ई.
5.	रतन देव	1168–1179 ई.
6.	लोहंग देव	1179–1194 ई.
7.	सारंग देव (महिपाल)	1194–1221 ई.

निष्कर्ष

प्राचीनकाल से ही ग्वालियर दुर्ग इतिहास में गौरवशाली स्थान रहा है। इस भू–भाग का उल्लेख पुराणकाल से होता आया है। महाभारत में इसे तोमर जनपद अभिधान दिया गया हैं। स्कंदपुराण एवं हरवंशपुराण में भी इस क्षेत्र का उल्लेख है। ग्वालियर के गुप्तेश्वर क्षेत्र में स्थित गुफा में प्रागैतिहासिक मानव निर्मित चित्रकारी पायी गयी है।

ग्वालियर दुर्ग भारत के विशिष्ट दुर्गों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह दुर्ग कई सदियों के इतिहास का मूक साक्षी रहा है। ग्वालियर दुर्ग व ग्वालियर नगर के अनेक नाम मिलते हैंः गोपाद्री, गोपगढ़, गोपाचल, गोपगिरि, गोव्वागिरि, गोपालपुर, ग्वालियपा गढ़ एवं गालव नगर। इतिहासकार हसन निजामी ने "ताज –उल–मआसिर" में ग्वालियर के किले को हिन्द के तमाम किलों की मणिमाला में एक उज्जवल मोती के रूप में निरूपित किया है। ग्वालियर दुर्ग असम्मित आकार में भूतल से 90 मीटर ऊँची गोपाचल पहाड़ी पर बनचा है। उत्तर से दक्षिण 2.8 किलो मीटर एवं पूर्व व पश्चिम में 180–840 मीटर के मध्य विस्तारित है। किले की बाहरी प्राचीर 10 से 12 मीटर ऊँची है। प्राचीरों के बीच बनी बुर्जों एवं मीनारों का आकार काफी सुन्दर एवं आर्कषक है। इन बुर्जों पर तोपें रखी जाती थी। दुर्ग के चारों ओर स्वर्णरेखा नदी के रूप में एक पारिखा का अस्तित्व प्राप्त होता है।

यहॉ यह स्पष्ट है कि शासकीय संरक्षण के साथ साथ स्थानीय नागरिकों का जागरूक होना भी दुर्गों एवं गढ़ियों के संरक्षण व सहेजने के लिये आवश्यक है। यदि इस विषय में स्थानीय नागरिक में चेतना आ जाती है तो इस समस्या का काफी समाधान स्वतः ही हो जावेगा। पुरातात्विक महत्व के स्मारकों के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य कई स्तरों पर किया जाने वाला कार्य है। पहले प्राचीन महत्व के स्थलों की खोज करना, उनके बारे में प्रमाणिक जानकारी जुटाने का कार्य महत्वपूर्ण है। उसके बाद पुरावशेषों का संरक्षण एवं संर्वधन का कार्य और अधिक महत्व का हैं। यूरोप में दुर्गो का संरक्षण कर उन्हें पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। अमेरिका में उद्यान सेवा ने एतिहासिक धरोहरों को सहेजने में विशेष भूमिका का निर्वाह किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूरोप के एतिहासिक स्थलों व दुर्गो को काफी छति हुयी थी। उन दुर्गो को उपयोग के योग्य बनाकर उन्हें संरक्षित किया जा रहा है। विदेशों एवं भारत में भी इस प्रकार के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं कि स्थानीय लोगों ने मिलकर अपनी एतिहासिक धरोहरों को सहेजा है। हमें यह तथ्य नहीं भूलना चाहिये कि संस्कृति एवं विरासत में ही राष्ट्र के प्राण तत्व निहित होते हैं और उन्हें उपेक्षित करते ही राष्ट्र मृत हो जाते हैं। यह उपयुक्त ही कहा गया है कि यदि राष्ट्र को समाप्त करना हो तो उसकी विरासत, संस्कृति एवं इतिहास को समाप्त करिये– राष्ट्र भी धीरे धीर समाप्त हो जावेगा। अतः हमें राष्ट्र को बचाना है तो अपनी संस्कृति, इतिहास व विरासत की रक्षा हर कीमत पर करनी होगी। इस प्रकार का जीवन चिंतन विकसित करना होगा जिससे यह संभव हो सके। दुर्गो एवं गढ़ियों व एतिहासिक विरासत का संरक्षण आज युग की मांग है। समय रहते हमें इन्हें बचाना होगा। इसके लिये हमें तात्कालिक लाभ त्यागकर दूर दृष्टि से कार्य करना होगा। हमारा अतीत गौरवमयी रहा है, वर्तमान हमें संभालना, सहेजना है यदि एसा करने में हम सफल रहे तो भविष्य स्वतः संभल जावेगा।

दुर्ग एवं गढ़ियों का स्थापत्य भारतीय एकता एवं अखण्डता का प्रतीक हैं। यह हमारी सांस्कृतिक एवं स्थानीय अस्मिता की अनमोल निधि है। दुर्गों का निर्माण शासकों एवं राजाओं ने करवाया लेकिन उनके निर्माण के पीछे अनेक शिल्पी, संगतकार श्रमिकों और कलाकारों की श्रम साधना छुपी हुयी है। इस प्रकार छैनी व हथौडे से लिखा गया इतिहास आज देश की अनमोल धरोहर है। दुर्ग एवं गढ़ियाँ क्षेत्रीय इतिहास के जीवंत स्त्रोत है। इन्हें सवांरने, सहेजने एवं संरक्षित करने की परम आवश्यकता है। जागरूकता के अभाव में स्थानीय नागरिक इन्हें नष्ट करते जा रहे है। इन एतिहासिक धरोहरों के खण्डहर होने में प्राकृतिक कारणों से ज्यादा मानवीय कारण अधिक उत्तरदायी हैं। पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित दुर्गों एवं स्मारकों को सहेजने का कार्य तो संतोषप्रद है लेकिन जिन दुर्गो एवं गढ़ियों का पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित घोषित नहीं किया गया है वे तो नष्ट होने के कगार पर हैं। अतः इन्हें शीघ्र संरक्षित व पुरा स्मारक घोषित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. मेमोरेंडा आन द इण्डियन स्टैट, पृ. 135, ग्वालियर जिला गजेटियर, 1968, पृ. 1।
2. शर्मा, विष्णु कान्त, (2010) बिलौआ की गढ़ी एवं जागीर, *जनरल आफ द मध्य प्रदेश इतिहास परिषद*, नं. 23, पृ. 252।
3. विल्स, डी मिचेल (1989) एन इन्टरोडक्शन टू द हिसटोरीकल जीयोग्राफी ऑफ गोपक्षेत्र, दसरना एण्ड जेजाकदेसा, बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ओरिएन्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज, यूनीवर्सिटी ऑफ लन्दन, पृ. 274।
4. द्विवेदी, हरिहर निवास (1980) गोपाचल आख्यान, ग्वालियर शोघ संस्थान, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, पृ. 18।
5. बाबरनामा (1979) अनुवादक बेवरीज, ए एस, पृ. 605–607।
6. दुबे, दीनानाथ (2013) भारत के दुर्ग, पृ 121 एवं शर्मा, विष्णु कान्त (2013) ग्वालियर एवं पश्चिमी बुदेलखण्ड के दुर्ग एवं गढ़ियां, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पृ. 11।

7. बाबरनामा, पृ. 608।
8. दुबे, दीनानाथ, भारत के दुर्ग, पृ. 121।
9. कृष्णन, मध्य प्रदेश जिला गजेटियर, पृ. 460।
10. मिश्र, आनन्द, (1996–97) संपादक –*युगयुगीन* ग्वालियर, पृ. 4।
11. ग्वालियर दुर्ग पर स्थित शिलालेख, एवं चक्रवर्ती कल्याण कुमार (1984) ग्वालियर फोर्ट, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, मध्य प्रदेश शासन, पृ. 89।
12. उपाध्याय, भगवतशरण, भारतीय कला का इतिहास, पृ. 158।
13. चक्रवर्ती, कल्याण कुमार (1984) ग्वालियर फोर्ट, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, मध्य प्रदेश शासन, पृ. 90।
14. दुबे, दीनानाथ, (1990) *भारत के दुर्ग,* पृ. 122 एवं चक्रवर्ती, कल्याण कुमार, *ग्वालियर फोर्ट,* पृ. 90, भारत सरकार।

––==00==––